Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

आर्यन यादव[1],डॉ. रमेश चंद सिंह[2]

[1]शोधार्थी, भूगोल विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर, भूगोल विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

Email: aryanyadavchiraigaon@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180212
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 56-64
February - 2026
Submitted: 16 Jan. 2026
Revised: 26 Jan. 2026
Accepted: 11 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

प्रवास विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण जनांकिकीय एवं सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया है, जो जनसंख्या वितरण, श्रम संरचना, नगरीकरण तथा क्षेत्रीय विकास को प्रभावित करती है। वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप विकसित एवं विकासशील देशों में आंतरिक तथा अंतरराष्ट्रीय प्रवास की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ी है। भारत में प्रवास मुख्यतः ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों तथा अविकसित से विकसित राज्यों की ओर देखा जाता है। विशेषकर उत्तर प्रदेश जैसे जनसंख्या–सघन राज्य में आर्थिक विषमता, कृषि पर निर्भरता एवं सीमित औद्योगिक विकास के कारण प्रवास की प्रवृत्ति अधिक तीव्र है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित जनपद जौनपुर भी इस प्रक्रिया से प्रभावित है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है, जहाँ रोजगार के सीमित अवसर, कम मजदूरी तथा कृषि आय में अस्थिरता के कारण कार्यशील जनसंख्या का अन्य राज्यों एवं महानगरों की ओर प्रवास बढ़ रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद जौनपुर के 21 विकासखण्डों एवं नगरीय क्षेत्र में प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विकासखण्डवार विश्लेषण किया गया है। अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें 440 प्रतिदर्शों का चयन कर प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी संकलित की गई। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि जनपद में प्रवास मुख्यतः अस्थायी एवं आवागमन प्रकृति का है। ग्रामीण क्षेत्रों में मौसमी रोजगार, बेरोजगारी एवं कम मजदूरी प्रमुख कारण हैं, जबकि नगरीय क्षेत्र में दैनिक आवागमन प्रवास का प्रभुत्व है। गंतव्य की दृष्टि से सर्वाधिक प्रवास अन्य राज्यों की ओर पाया गया, जो स्थानीय स्तर पर औद्योगिक एवं उच्च रोजगार अवसरों की कमी को दर्शाता है। समग्रतः यह प्रवृत्ति आर्थिक विवशताओं एवं क्षेत्रीय विकास असमानता का परिणाम है, जिसके समाधान हेतु रोजगारोन्मुख क्षेत्रीय नियोजन आवश्यक है।

मुख्यशब्द– *प्रवास, विकासखण्ड, ग्रामीण–नगरीय प्रवास, रोजगार, कृषि आय।*

प्रस्तावना

प्रवास, मानव की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो जनसंख्या के स्थानिक वितरण, सामाजिक–आर्थिक संरचना तथा क्षेत्रीय विकास को गहराई से प्रभावित करती है। ऐतिहासिक रूप से प्रवास को जीविका की खोज, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं सुरक्षा की आवश्यकता से जोड़ा जाता रहा है, किंतु आधुनिक काल में यह प्रक्रिया आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं आकांक्षात्मक कारकों से अधिक प्रभावित होने लगी है। भारत जैसे विकासशील देश में प्रवास एक व्यापक एवं जटिल परिघटना है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी तथा अंतर्राज्यीय प्रवास की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। कृषि पर बढ़ते दबाव, सीमांत भू–स्वामित्व, बेरोज़गारी, कम मजदूरी तथा शहरी क्षेत्रों में बेहतर रोजगार एवं जीवन सुविधाओं की उपलब्धता ने प्रवास को और अधिक तीव्र कर दिया है। उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग, विशेषकर जनपद जौनपुर, कृषि प्रधान क्षेत्र होने के बावजूद सीमित औद्योगिक विकास एवं रोजगार अवसरों के कारण प्रवास की समस्या से जूझ रहा है। यहाँ से बड़ी संख्या में लोग दिल्ली, मुंबई, पंजाब, गुजरात तथा अन्य औद्योगिक राज्यों की ओर प्रवास करते हैं। इसके साथ–साथ नगरीय क्षेत्रों के आसपास आवागमन प्रवास की प्रवृत्ति भी तीव्र होती जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विश्लेषण करना तथा ग्रामीण–नगरीय प्रवास प्रवृत्तियों को भौगोलिक दृष्टिकोण से समझना है। यह अध्ययन न केवल प्रवास की क्षेत्रीय विविधताओं को स्पष्ट करता है, बल्कि रोजगार सृजन, संतुलित क्षेत्रीय विकास एवं नीति निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
आर्यन यादव, शोधार्थी, भूगोल विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

How to cite this article:
यादव, . आर्यन ., & सिंह, . रमेश . चंद . (2026). जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 56–64.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18933399

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18933399
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार (अस्थायी, स्थायी एवं आवागमन) का विश्लेषण करना।
- जनपद जौनपुर में प्रवास के गंतव्यों (जनपद के भीतर, राज्य के भीतर, अन्य राज्य एवं विदेश) का अध्ययन करना।
- प्रवास को प्रेरित करने वाले प्रमुख सामाजिक–आर्थिक कारणों का विकासखण्डवार मूल्यांकन करना।
- प्रवास के प्रतिरूप को समझते हुए क्षेत्रीय विकास एवं नियोजन के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि वह वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी समस्या का अध्ययन, विश्लेषण एवं समाधान किया जाता है। इसमें आँकड़ों का संग्रह विधि (प्राथमिक एवं द्वितीयक), नमूना चयन तथा विश्लेषण की तकनीकों का समावेश होता है। यह शोध को तार्किक, प्रमाणिक और विश्वसनीय बनाती है।

नमूना चयन विधि (Sampling Method) एवं आँकड़ों का संकलन की पद्धति

प्रस्तुत शोध "जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" के अंतर्गत तथ्यों के संकलन हेतु वैज्ञानिक नमूना चयन विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए बहु–स्तरीय (Multi&stage) एवं स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति (Stratified Random Sampling Method) को अपनाया गया।

आँकड़ों का संकलन

प्राथमिक आँकड़ों का संकलन संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया, जिसमें प्रवास के प्रकार, गंतव्य, कारण, अवधि एवं सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित प्रश्न शामिल थे। साक्षात्कार उत्तरदाताओं के निवास स्थान पर व्यक्तिगत रूप से लिया गया, जिससे तथ्यों में एकरूपता एवं विश्वसनीयता बनी रही।

द्वितीयक आँकड़े जनगणना रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी पत्रिका, विकासखण्ड कार्यालयों, सरकारी प्रकाशनों तथा शोध–पत्रों से प्राप्त किए गए। दोनों प्रकार के आँकड़ों के उपयोग से अध्ययन को प्रमाणिक एवं विश्लेषणात्मक आधार मिला।

नमूना आकार

अध्ययन में कुल 440 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जो कि वैज्ञानिक गणना (400 के निर्धारित न्यूनतम नमूना आकार + 10% अतिरिक्त मार्जिन) पर आधारित है। यह नमूना आकार शोध की विश्वसनीयता एवं प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है।

साहित्य समीक्षा

प्रवास संबंधी सिद्धांतों का प्रारम्भिक एवं आधारभूत कार्य Ernst Georg Ravenstein (1885) द्वारा प्रस्तुत "Laws of Migration" से माना जाता है। रेवेनस्टीन ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि अधिकांश प्रवास अल्प दूरी के होते हैं तथा आर्थिक कारण प्रवास के प्रमुख प्रेरक तत्व होते हैं। उन्होंने चरणबद्ध प्रवास (Step Migration) की अवधारणा भी प्रस्तुत की, जिसने प्रवास के स्थानिक प्रतिरूप के विश्लेषण को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इसके पश्चात Everett S- Lee (1966) ने प्रवास का प्रसिद्ध "Push–Pull Theory" प्रतिपादित किया, जिसमें उन्होंने उद्गम क्षेत्र के प्रतिकर्षक (Push) कारकों तथा गंतव्य क्षेत्र के आकर्षक (Pull) कारकों को प्रवास का मूल निर्धारक बताया। ली के अनुसार मध्यवर्ती बाधाएँ एवं व्यक्तिगत कारक भी प्रवास निर्णय को प्रभावित करते हैं। इसी क्रम में Wilbur Zelinsky (1971) ने "Mobility Transition Model" प्रस्तुत किया, जिसमें जनांकिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों के साथ प्रवासन प्रतिरूपों में परिवर्तन को स्पष्ट किया गया। उनके अनुसार औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया के साथ ग्रामीण–शहरी प्रवास में वृद्धि होती है। दूसरी ओर, Samuel A- Stouffer (1940) us "Intervening Opportunities Theory" के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि प्रवास की दूरी से अधिक महत्वपूर्ण मार्ग में उपलब्ध अवसरों की संख्या होती है; यदि निकट क्षेत्र में पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों तो दूरस्थ प्रवास की प्रवृत्ति कम हो जाती है।

भारतीय संदर्भ में Census of India (2011) द्वारा प्रकाशित Migration Tables (D-Series) प्रवास संबंधी प्रामाणिक आँकड़े प्रदान करती हैं। जनगणना के अनुसार भारत में विवाह एवं रोजगार प्रवास के प्रमुख कारण हैं तथा आंतरिक प्रवास का प्रतिशत उल्लेखनीय है। भारतीय शहरीकरण एवं प्रवास के अध्ययन में Amitabh Kundu (2003) का कार्य महत्वपूर्ण है। उन्होंने ग्रामीण–शहरी प्रवास को क्षेत्रीय असमानताओं, नगरीय रोजगार अवसरों तथा अनौपचारिक क्षेत्र के विस्तार से जोड़कर देखा। इसके अतिरिक्त S- Chandrasekhar (2002) ने भारत में आंतरिक प्रवास के सामाजिक–आर्थिक निर्धारकों का विश्लेषण करते हुए शिक्षा स्तर, आय, भूमि स्वामित्व एवं सामाजिक संरचना को प्रमुख कारक माना। पूर्वी उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में शर्मा (2015) द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध–प्रबंध में ग्रामीण–शहरी प्रवास के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में बेरोजगारी, कृषि संकट एवं आधारभूत सुविधाओं की कमी को प्रमुख प्रतिकर्षक कारक बताया गया, जो वर्तमान अध्ययन क्षेत्र जनपद जौनपुर के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। इस प्रकार उपर्युक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि प्रवास के सिद्धांतों एवं भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों ने प्रवासन के कारणों, प्रकारों एवं गंतव्यों की व्याख्या की है, किंतु विकासखण्ड स्तर पर सूक्ष्म भौगोलिक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध इसी शोध–अंतर को पूर्ण करने का प्रयास करता है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद जौनपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है और भौगोलिक दृष्टि से गंगा के मैदानी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह जनपद लगभग 25°24′ से 26°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 82°07′ से 83°05′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जौनपुर

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

जनपद की सीमाएँ उत्तर में आजमगढ़, दक्षिण में प्रयागराज, पूर्व में वाराणसी एवं पश्चिम में प्रतापगढ़ जनपदों से मिलती हैं। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद जौनपुर में 21 विकासखण्ड एवं एक नगरीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, जहाँ धान, गेहूँ, गन्ना एवं दलहन प्रमुख फसलें हैं। सीमित औद्योगिक विकास, बढ़ती जनसंख्या तथा रोजगार के अपर्याप्त अवसरों के कारण यह क्षेत्र प्रवास की समस्या से प्रभावित रहा है। भौगोलिक स्थिति, कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक–आर्थिक संरचना के कारण जनपद जौनपुर प्रवास अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है।

मानचित्र क्रमांक 1

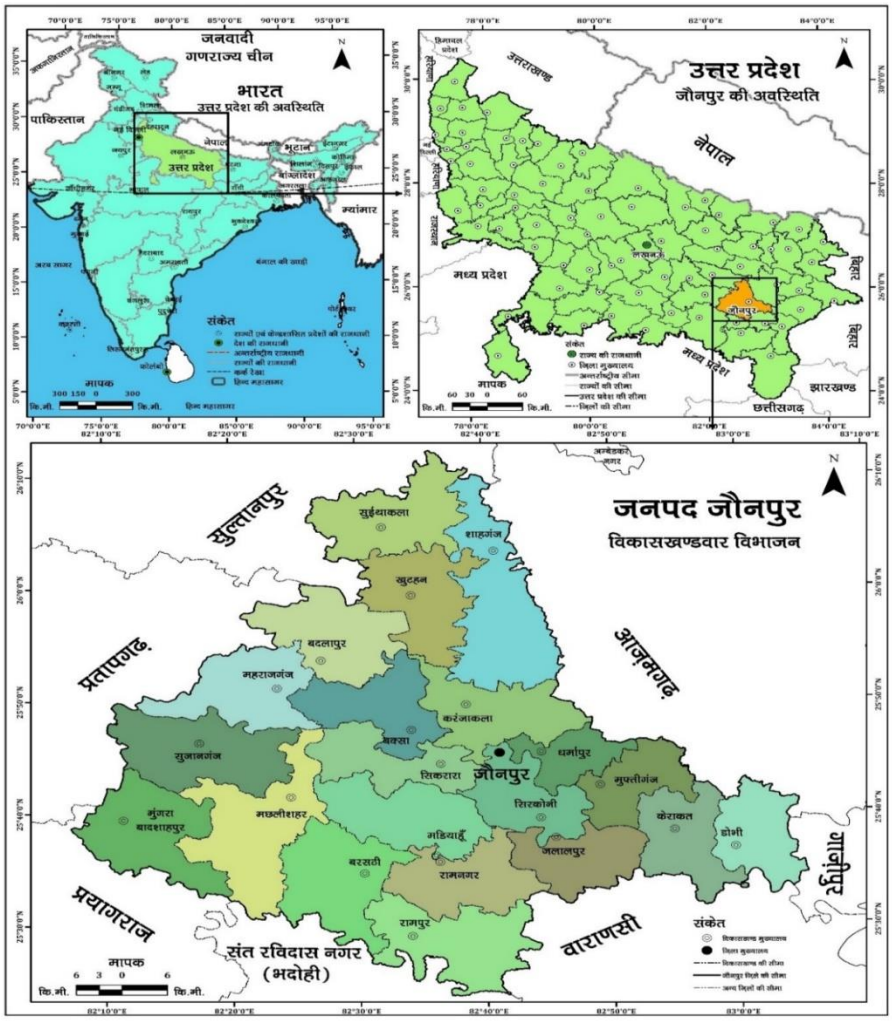

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। अध्ययन के लिए जनपद जौनपुर के सभी 21 विकासखण्डों तथा नगरीय क्षेत्र से कुल 440 प्रतिदर्शों का चयन किया गया। प्रत्येक विकासखण्ड से उसकी परिवारों की संख्या के अनुसार प्रतिदर्श लिए गए।

आँकड़ों का विश्लेषण

- प्राप्त आँकड़ों का तालिकीय, प्रतिशत एवं तुलनात्मक विधि से विश्लेषण किया गया
- प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विकासखण्डवार अध्ययन किया गया
- ग्रामीण–नगरीय तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाले गए

प्रवास के प्रकार

प्रस्तुत तालिका के माध्यम से जनपद जौनपुर के 21 विकासखण्डों तथा नगरीय क्षेत्र में प्रवास के प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के लिए कुल 440 प्रतिदर्श चुने गए हैं।

1. अस्थायी प्रवास का वितरण

जनपद में कुल 216 उत्तरदाता अस्थायी प्रवास से संबंधित पाए गए। अस्थायी प्रवास की सर्वाधिक संख्या शाहगंज (13), करंजाकला (12), बदलापुर (12), मछलीशहर (11) तथा खुटहन (11) विकासखण्डों में दर्ज की गई। यह स्थिति दर्शाती है कि इन क्षेत्रों में कृषि आधारित मौसमी रोजगार, गन्ना कटाई, निर्माण कार्य तथा असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों की अस्थायी आवाजाही अधिक

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

है। इसके विपरीत, धर्मापुर (5) और मुफ़्तीगंज (6) विकासखण्डों में अस्थायी प्रवास अपेक्षाकृत कम पाया गया, जो स्थानीय स्तर पर सीमित किंतु अपेक्षाकृत स्थिर आजीविका अवसरों की ओर संकेत करता है।

2. स्थायी प्रवास की प्रवृत्ति

स्थायी प्रवास से संबंधित कुल 92 उत्तरदाता पाए गए। स्थायी प्रवास का प्रतिशत नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक (7) है, जो शहरीकरण, बेहतर आवास, शिक्षा एवं स्थायी रोजगार अवसरों की उपलब्धता को दर्शाता है। ग्रामीण विकासखण्डों में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम है; अधिकांश विकासखण्डों में स्थायी प्रवास की संख्या 3 से 4 के बीच सीमित रही। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि जनपद जौनपुर से होने वाला प्रवास मुख्यतः दीर्घकालिक बसावट की बजाय अस्थायी अथवा आवागमन प्रकृति का है।

3. आवागमन प्रवास

अध्ययन क्षेत्र में 132 उत्तरदाता आवागमन प्रवास से संबंधित पाए गए। आवागमन प्रवास की सर्वाधिक संख्या नगरीय क्षेत्र (19) में दर्ज की गई, जो दैनिक/साप्ताहिक नौकरी, व्यापार, शिक्षा एवं सेवा क्षेत्र की गतिविधियों से जुड़ी हुई है। इसके अतिरिक्त शाहगंज (10), मछलीशहर (7), करंजाकला (7), बदलापुर (7), मड़ियाहू (7), रामनगर (7) तथा रामपुर (7) में भी आवागमन प्रवास की प्रवृत्ति उल्लेखनीय है। यह स्थिति दर्शाती है कि अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख कस्बों और नगरों के आसपास के ग्रामीण क्षेत्र शहरी प्रभाव क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहे हैं।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद जौनपुर में प्रवास मुख्यतः अस्थायी एवं आवागमन प्रकृति का है। अस्थायी प्रवास ग्रामीण विकासखण्डों में कृषि एवं असंगठित क्षेत्र से संबंधित आर्थिक दबावों का परिणाम है, जबकि नगरीय क्षेत्र में आवागमन प्रवास रोजगार, शिक्षा एवं सेवा क्षेत्र की उपलब्धता से प्रेरित है। स्थायी प्रवास का अनुपात अपेक्षाकृत कम है, जो जनपद में सीमित औद्योगिक एवं दीर्घकालिक शहरी रोजगार अवसरों को दर्शाता है।

तालिका क्रमांक–1

जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास का प्रकार				
विकासखण्ड	**अस्थायी**	**स्थायी**	**आवागमन**	**प्रतिदर्श आकार**
सुइथाकला	9	4	5	18
शाहगंज	13	6	10	29
खुटहन	11	4	6	21
करंजाकला	12	4	7	23
बदलापुर	12	4	7	23
महराजगंज	8	3	5	16
बक्सा	9	4	6	19
सुजानगंज	10	4	7	21
मुगराबादशाहपुर	10	4	6	20
मछलीशहर	11	4	7	22
मड़ियाहू	10	4	7	21
बरसठी	10	4	6	20
सिकरारा	9	3	5	17
धर्मापुर	5	2	4	11
रामनगर	10	4	7	21
रामपुर	10	4	7	21
मुफ़्तीगंज	6	3	4	13
जलालपुर	8	4	5	17
केराकत	9	4	6	19
डोभी	8	4	5	17
सिरकोनी	9	4	5	18
नगरीय	7	7	19	33
कुल	216	92	132	440

स्रोत–जनगणना 2011 एवं शोध छात्र द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण 2026

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

आरेख क्रमांक–1

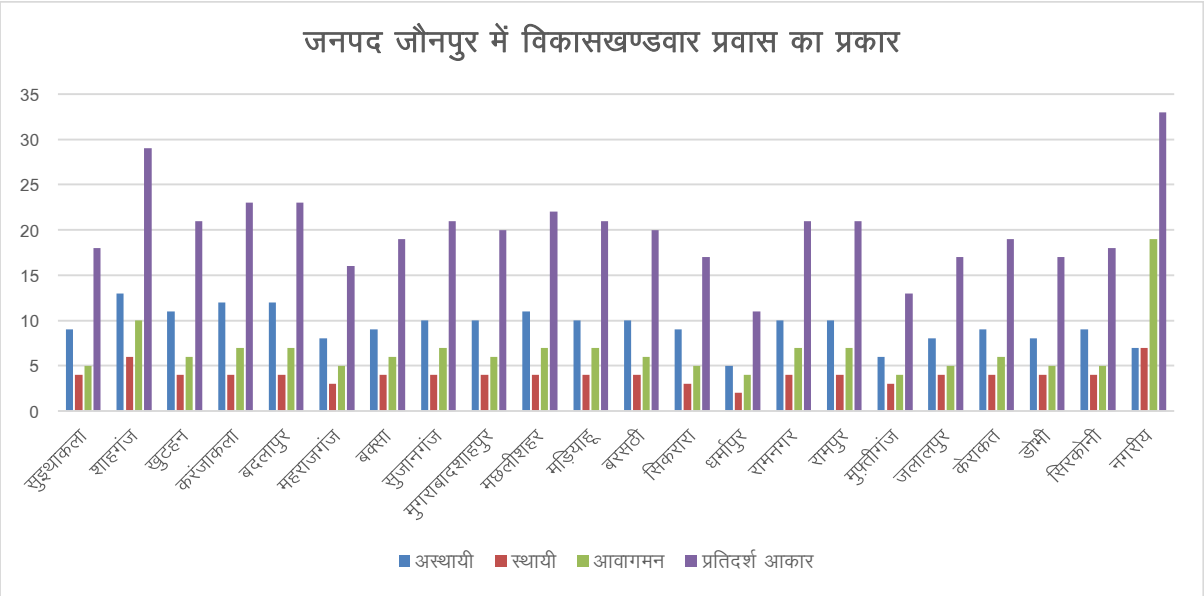

प्रवास का गंतव्य

प्रस्तुत तालिका के माध्यम से जनपद जौनपुर के विभिन्न विकासखण्डों एवं नगरीय क्षेत्र से होने वाले प्रवास के गंतव्य स्वरूपकृजनपद के भीतर, राज्य के भीतर, अन्य राज्य तथा विदेशकृका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए कुल 440 प्रतिदर्श चयनित किए गए हैं।

1. जनपद के भीतर प्रवास

तालिका के अनुसार कुल 96 उत्तरदाता जनपद के भीतर ही प्रवास करते पाए गए। यह प्रवृत्ति मुख्यतः नगरीय क्षेत्र (8), शाहगंज (5), करंजाकला (5), बदलापुर (5) तथा मछलीशहर (5) में अधिक देखी गई। जनपद के भीतर प्रवास का कारण स्थानीय कस्बों में रोजगार, शिक्षा, व्यापार तथा प्रशासनिक गतिविधियों की उपलब्धता है। इसके विपरीत धर्मापुर (3) एवं मुफ़्तीगंज (3) में यह प्रवृत्ति न्यूनतम पाई गई, जो इन क्षेत्रों के सीमित शहरी संपर्क को दर्शाती है।

2. राज्य के भीतर प्रवास

राज्य के भीतर प्रवास से संबंधित कुल 124 उत्तरदाता (28.18:) पाए गए। यह प्रवृत्ति लगभग सभी विकासखण्डों में समान रूप से विद्यमान है, विशेषकर शाहगंज (8), नगरीय क्षेत्र (9), करंजाकला (6), बदलापुर (6), मछलीशहर (6), मड़ियाहू (6) तथा रामनगर (6) में। राज्य के भीतर प्रवास मुख्यतः लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, कानपुर एवं गोरखपुर जैसे शहरीदृऔद्योगिक केंद्रों की ओर केंद्रित है।

3. अन्य राज्यों की ओर प्रवास

अध्ययन में सर्वाधिक प्रवास अन्य राज्यों की ओर पाया गया, जिसमें कुल 196 उत्तरदाता सम्मिलित हैं– अन्य राज्य प्रवास की तीव्रता शाहगंज (14), करंजाकला (11), बदलापुर (11), खुटहन (10), सुजानगंज (10), मछलीशहर (10), मड़ियाहू (10), रामनगर (10) तथा रामपुर (10) में विशेष रूप से अधिक है। यह प्रवृत्ति स्पष्ट करती है कि जनपद जौनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग दिल्ली, मुंबई, पंजाब, गुजरात, हरियाणा आदि राज्यों की ओर रोजगार हेतु प्रवास करते हैं।

4. विदेश प्रवास

विदेश प्रवास का प्रतिशत तुलनात्मक रूप से कम है। कुल 24 उत्तरदाता विदेश प्रवास से संबंधित पाए गए। विदेश प्रवास की उपस्थिति लगभग सभी विकासखण्डों में 1–1 प्रतिदर्श के रूप में दर्ज की गई है, जबकि नगरीय क्षेत्र (8) में यह संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। यह स्थिति दर्शाती है कि विदेश प्रवास मुख्यतः नगरीय एवं अपेक्षाकृत आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग तक सीमित है।

5. ग्रामीण–नगरीय अंतर

ग्रामीण विकासखण्डों में प्रवास का प्रमुख गंतव्य अन्य राज्य है, जबकि नगरीय क्षेत्र में प्रवास का स्वरूप बहुआयामी है–जहाँ जनपद के भीतर, राज्य के भीतर, अन्य राज्य तथा विदेशकृचारों ही गंतव्य लगभग समान रूप से पाए गए हैं। यह अंतर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार संकट तथा नगरीय क्षेत्रों में विविध अवसरों की उपलब्धता को दर्शाता है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनपद जौनपुर में प्रवास का प्रमुख गंतव्य अन्य राज्य हैं, जो कुल प्रवास का लगभग 45 प्रतिशत है। राज्य के भीतर तथा जनपद के भीतर प्रवास द्वितीयक भूमिका में हैं, जबकि विदेश प्रवास सीमित किंतु नगरीय क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। यह स्थिति जनपद में औद्योगिक एवं उच्च स्तरीय रोजगार अवसरों की कमी को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

तालिका क्रमांक–2

जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवासन का गंतव्य					
विकासखण्ड	जनपद भीतर	राज्य भीतर	अन्य राज्य	विदेश	प्रतिदर्श आकार
सुइथाकला	3	5	9	1	18
शाहगंज	5	8	14	2	29
खुटहन	4	6	10	1	21
करंजाकला	5	6	11	1	23
बदलापुर	5	6	11	1	23
महराजगंज	4	5	6	1	16
बक्सा	4	6	8	1	19
सुजानगंज	4	6	10	1	21
मुगराबादशाहपुर	4	6	9	1	20
मछलीशहर	5	6	10	1	22
मड़ियाहू	4	6	10	1	21
बरसठी	4	6	9	1	20
सिकरारा	4	5	7	1	17
धर्मापुर	3	3	5	0	11
रामनगर	4	6	10	1	21
रामपुर	4	6	10	1	21
मुफ़्तीगंज	3	4	6	0	13
जलालपुर	4	5	7	1	17
केराकत	4	6	8	1	19
डोभी	4	5	7	1	17
सिरकोनी	4	5	8	1	18
नगरीय	8	9	8	8	33
कुल	96	124	196	24	440

स्रोत–जनगणना 2011 एवं शोध छात्र द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण 2026

आरेख क्रमांक–2

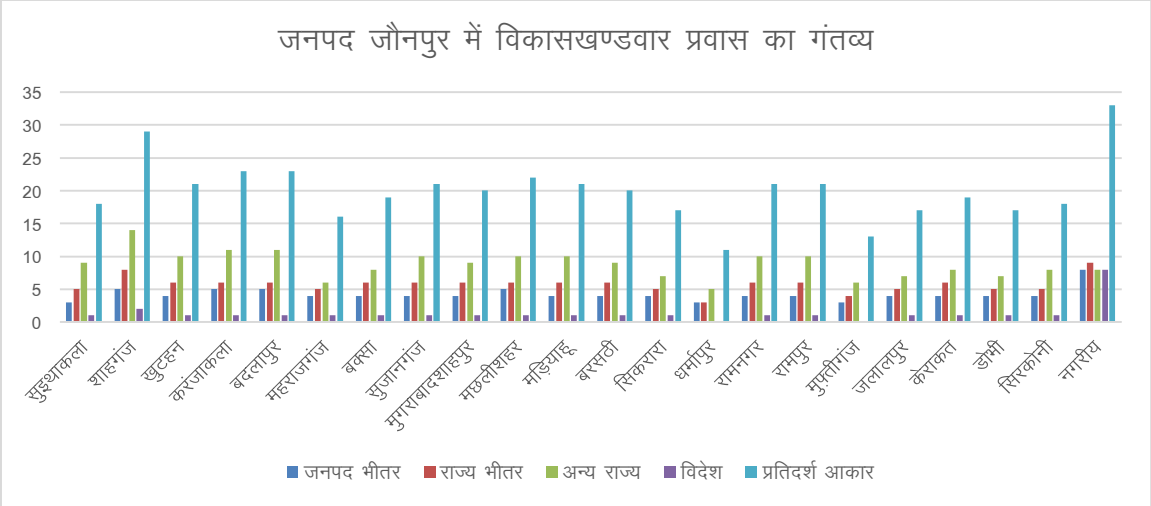

प्रवास के कारण

प्रस्तुत तालिका के माध्यम से जनपद जौनपुर के विभिन्न विकासखण्डों एवं नगरीय क्षेत्र में प्रवास को प्रेरित करने वाले प्रमुख कारणों–बेरोज़गारी, कृषि आय में कमी, कम मजदूरी, शिक्षा, बेहतर जीवन स्तर तथा शहरी रोजगारकृका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु कुल 440 प्रतिदर्श चयनित किए गए हैं।

1. बेरोज़गारी प्रमुख प्रेरक तत्व

तालिका के अनुसार कुल 132 उत्तरदाता ने बेरोज़गारी को प्रवास का मुख्य कारण बताया। बेरोज़गारी के कारण प्रवास की तीव्रता शाहगंज (9), खुटहन (7), करंजाकला (7), बदलापुर (7) तथा मछलीशहर (7) विकासखण्डों में अधिक पाई गई। यह स्थिति दर्शाती है कि इन क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर स्थायी एवं पर्याप्त रोजगार अवसरों का अभाव है। धर्मापुर (4) तथा मुफ़्तीगंज (4) में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम दर्ज की गई।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

2. कृषि आय में कमी

कुल 96 उत्तरदाता ने कृषि आय में कमी को प्रवास का कारण बताया। यह कारण विशेषकर शाहगंज (6), करंजाकला (6), बदलापुर (6) तथा खुटहन, मछलीशहर, मड़ियाहू (5–5) विकासखण्डों में अधिक प्रभावी पाया गया। छोटे एवं सीमांत भू–स्वामित्व, सिंचाई की सीमित सुविधाएँ तथा बढ़ती लागत ने कृषि को अलाभकारी बना दिया है।

3. कम मजदूरी

अध्ययन में 74 उत्तरदाता (16.82:) ने कम मजदूरी को प्रवास का कारण बताया। कम मजदूरी से प्रेरित प्रवास शाहगंज (5), खुटहन (4), करंजाकला (4), बदलापुर (4), मछलीशहर (4), मड़ियाहू (4) तथा बरसठी (4) में उल्लेखनीय है। यह दर्शाता है कि ग्रामीण मजदूरी दर और शहरी मजदूरी दर के बीच पर्याप्त अंतर मौजूद है।

4. शिक्षा संबंधी कारण

कुल 42 उत्तरदाता ने शिक्षा को प्रवास का प्रमुख कारण बताया। शिक्षा हेतु प्रवास मुख्यतः नगरीय क्षेत्र (8) में केंद्रित पाया गया, जबकि ग्रामीण विकासखण्डों में यह संख्या सामान्यतः 1 से 2 के बीच रही। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों का संकेन्द्रण शहरी क्षेत्रों तक सीमित है।

5. बेहतर जीवन स्तर की आकांक्षा

तालिका के अनुसार 54 उत्तरदाता बेहतर जीवन स्तर की खोज में प्रवास करते पाए गए। इस कारण से प्रवास नगरीय क्षेत्र (9), शाहगंज (3) तथा मुगराबादशाहपुर (3) में अपेक्षाकृत अधिक दर्ज किया गया। यह प्रवृत्ति सामाजिक आकांक्षाओं, शहरी सुविधाओं एवं जीवन–शैली परिवर्तन को दर्शाती है।

6. शहरी रोजगार

कुल 42 उत्तरदाता ने शहरी रोजगार को प्रवास का कारण बताया। यह कारण विशेष रूप से नगरीय क्षेत्र (8) में प्रमुख है, जबकि अधिकांश ग्रामीण विकासखण्डों में इसकी संख्या 1–2 के बीच सीमित रही। इससे स्पष्ट होता है कि उद्योग, सेवा एवं असंगठित क्षेत्र के रोजगार मुख्यतः शहरी केंद्रों तक सीमित हैं। ग्रामीण विकासखण्डों में प्रवास के प्रमुख कारण बेरोज़गारी, कृषि आय में कमी एवं कम मजदूरी हैं, जबकि नगरीय क्षेत्र में प्रवास मुख्यतः शिक्षा, बेहतर जीवन स्तर एवं शहरी रोजगार से प्रेरित है। यह अंतर जनपद जौनपुर में विद्यमान आर्थिक असमानताओं एवं क्षेत्रीय विकास विषमता को स्पष्ट करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनपद जौनपुर में प्रवास का प्रमुख कारण बेरोज़गारी है, जिसके पश्चात कृषि आय में कमी एवं कम मजदूरी का स्थान है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास आर्थिक विवशताओं से प्रेरित है, जबकि नगरीय क्षेत्र में प्रवास आकांक्षात्मक एवं अवसर–आधारित स्वरूप ग्रहण करता है।

तालिका क्रमांक–3

जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवासन के कारण							
विकासखण्ड	बेरोज़गारी	कृषि आय कमी	कम मजदूरी	शिक्षा	बेहतर जीवन	शहरी रोजगार	प्रतिदर्श आकार
सुइथाकला	6	4	3	1	2	2	18
शाहगंज	9	6	5	3	3	3	29
खुटहन	7	5	4	2	2	1	21
करंजाकला	7	6	4	2	2	2	23
बदलापुर	7	6	4	2	2	2	23
महराजगंज	5	4	3	1	2	1	16
बक्सा	6	4	3	2	2	2	19
सुजानगंज	6	5	4	2	2	2	21
मुगराबादशाहपुर	6	4	3	2	3	2	20
मछलीशहर	7	5	4	2	2	2	22
मड़ियाहू	6	5	4	2	2	2	21
बरसठी	6	4	4	2	2	2	20
सिकरारा	5	4	3	2	2	1	17
धर्मापुर	4	3	2	1	1	0	11
रामनगर	6	5	4	2	2	2	21
रामपुर	6	5	4	2	2	2	21
मुफ़्तीगंज	4	3	2	1	2	1	13
जलालपुर	5	4	3	2	2	1	17
केराकत	6	4	3	2	2	2	19
डोभी	5	4	3	2	2	1	17
सिरकोनी	5	4	3	2	2	2	18
नगरीय	4	2	2	8	9	8	33
कुल	132	96	74	42	54	42	440

स्रोत–जनगणना 2011 एवं शोध छात्र द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण 2026

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

आरेख क्रमांक–3

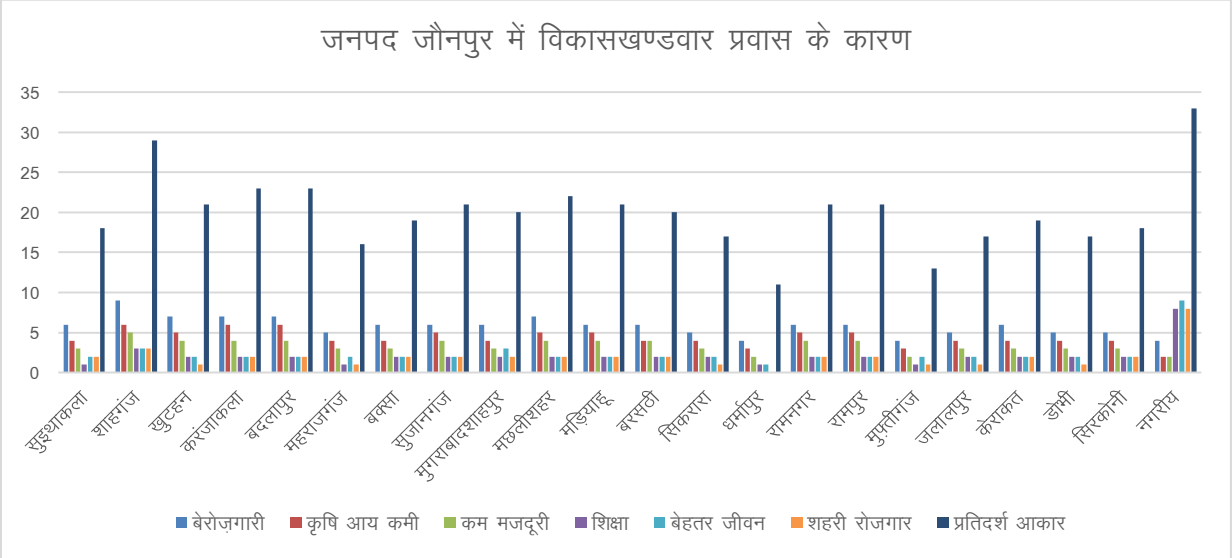

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "जनपद जौनपुर में विकासखण्डवार प्रवास के प्रकार, गंतव्य एवं कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" से यह स्पष्ट होता है कि जनपद में प्रवासन की प्रवृत्ति मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित है तथा इसका स्वरूप अस्थायी एवं आवागमन प्रधान है। कुल 440 प्रतिदर्शों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अस्थायी प्रवास (216) सर्वाधिक है, जो ग्रामीण विकासखण्डों में कृषि पर निर्भरता, सीमित आय एवं असंगठित क्षेत्र में मौसमी रोजगार का परिणाम है। आवागमन प्रवास (132) विशेष रूप से नगरीय क्षेत्र एवं उससे सटे विकासखण्डों में अधिक पाया गया, जो शहरी रोजगार, शिक्षा एवं सेवा क्षेत्र की उपलब्धता को दर्शाता है। स्थायी प्रवास (92) का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि जनपद से दीर्घकालिक बसावट की अपेक्षा अल्पकालिक एवं अवसर–आधारित प्रवास अधिक है। गंतव्य के संदर्भ में अन्य राज्यों की ओर प्रवास (196) सर्वाधिक पाया गया, जो स्थानीय स्तर पर रोजगार अवसरों की कमी को रेखांकित करता है। राज्य के भीतर (124) एवं जनपद के भीतर (96) प्रवास द्वितीयक भूमिका में हैं, जबकि विदेश प्रवास (24) नगरीय एवं आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग तक सीमित है। यह स्थिति जनपद की सीमित औद्योगिक प्रगति एवं क्षेत्रीय आर्थिक विषमता को दर्शाती है।

प्रवास के कारणों में बेरोजगारी (132) प्रमुख प्रेरक तत्व है, इसके पश्चात कृषि आय में कमी (96) एवं कम मजदूरी (74) का स्थान है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास मुख्यतः आर्थिक विवशता से प्रेरित है, जबकि नगरीय क्षेत्र में शिक्षा, बेहतर जीवन स्तर एवं शहरी रोजगार अवसर प्रवास के आकांक्षात्मक कारण हैं। इस प्रकार जनपद जौनपुर में प्रवासन एक संरचनात्मक आर्थिक समस्या के रूप में उभरता है, जो क्षेत्रीय विकास असंतुलन का संकेतक है।

सुझाव

- ग्रामीण विकासखण्डों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (MSME), कृषि–आधारित उद्योग तथा खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना की जानी चाहिए, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार अवसर बढ़ें।
- सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, आधुनिक तकनीक का उपयोग तथा बहुफसली प्रणाली को प्रोत्साहन देकर कृषि आय में वृद्धि की जा सकती है, जिससे कृषि आधारित प्रवास में कमी आएगी।
- युवाओं के लिए कौशल विकास एवं स्वरोजगार योजनाएँ (Skill Training, Start–up Support) लागू की जानी चाहिए, ताकि वे स्थानीय स्तर पर आजीविका प्राप्त कर सकें।
- सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संचार सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण कर क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सकता है।
- उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों की स्थापना ग्रामीण क्षेत्रों में की जानी चाहिए, जिससे शिक्षा हेतु होने वाले प्रवास में कमी आए।
- विकासखण्ड स्तर पर योजनाबद्ध आर्थिक विकास एवं निवेश को प्राथमिकता दी जाए, ताकि क्षेत्रीय विषमता कम हो तथा प्रवास की बाध्यता घटे।
- अन्य राज्यों में कार्यरत श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा, बीमा एवं श्रमिक पंजीकरण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Ravenstein, E. G. (1885). The laws of migration. *Journal of the Statistical Society of London, 48*(2), 167–235.
2. Lee, E. S. (1966). A theory of migration. *Demography, 3*(1), 47–57.
3. Zelinsky, W. (1971). The hypothesis of the mobility transition. *Geographical Review, 61*(2), 219–249.
4. Stouffer, S. A. (1940). Intervening opportunities: A theory relating mobility and distance. *American Sociological Review, 5*(6), 845–867.

5. Census of India. (2011). *Migration Tables (D-Series).* Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
6. Kundu, A. (2003). Urbanization and urban governance: Search for a perspective beyond neo-liberalism. *Economic and Political Weekly.*
7. Chandrasekhar, S. (2002). Internal migration in India: Issues and trends. *Margin: The Journal of Applied Economic Research, 1*(1), 33–56.
8. Sharma, R. (2015). *Rural–urban migration and its socio-economic impacts in Eastern Uttar Pradesh* (Doctoral dissertation, Banaras Hindu University).
9. Bhagat, R. B. (2017). Migration and urban transition in India. Economic and Political Weekly, 52(31), 35–42.
10. Bhagat, R. B., & Mohanty, S. (2009). Emerging pattern of urbanisation and migration in Uttar Pradesh. Journal of Social and Economic Development, 11(2), 45–62.
11. Census of India. (2011). Migration tables (D-Series). Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
12. Deshingkar, P., & Akter, S. (2009). Migration and human development in India. United Nations Development Programme.
13. Government of Uttar Pradesh. (2018). Economic survey of Uttar Pradesh. Planning Department, Government of Uttar Pradesh.
14. Harris, J. R., & Todaro, M. P. (1970). Migration, unemployment and development: A two-sector analysis. American Economic Review, 60(1), 126–142.
15. Kundu, A. (2009). Exclusionary urbanisation in India: Problems and prospects. Economic and Political Weekly, 44(48), 45–53.
16. Lee, E. S. (1966). A theory of migration. Demography, 3(1), 47–57.
17. National Sample Survey Office. (2010). Migration in India (64th Round Report No. 533). Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
18. Premi, M. K. (1998). Internal migration in India: Patterns and policies. B. R. Publishing Corporation.
19. Ravenstein, E. G. (1885). The laws of migration. Journal of the Statistical Society of London, 48(2), 167–235.
20. Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). District census handbook: Jaunpur. Government of India.
21. Srivastava, R. (2011). Labour migration in India: Recent trends and patterns. Indian Journal of Labour Economics, 54(3), 411–440.
22. United Nations Development Programme. (2009). Human development report 2009: Overcoming barriers – Human mobility and development. UNDP.
23. World Bank. (2009). World development report 2009: Reshaping economic geography. World Bank.
24. Zelinsky, W. (1971). The hypothesis of the mobility transition. Geographical Review, 61(2), 219–249.